Roll No..... Total No. of Sections : 3

Total No. of Printed Pages : 5

Online Annual Examination, 2022

Code No. : BA-103

B.A. I

HINDI LITERATURE

Paper I

[Prachin Hindi Kavya]

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 75

नोट: खण्ड 'अ' अति लघु उत्तरीय प्रकार का, जिसमें दस प्रश्न अनिवार्य हैं। खण्ड 'ब' में लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं एवं खण्ड 'स' में दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। खण्ड 'अ' को सबसे पहले हल किया जाना है।

खण्ड 'अ'

निम्नांकित अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर **एक या दो** वाक्यों में दीजिए। **[1 × 10 = 10]**

1. निर्गुण काव्य की शाखाओं के नाम लिखिए।
2. बीजक किसके ग्रन्थ का नाम है ?
3. सूरदास के गुरु का क्या नाम था ?
4. तुलसी के बचपन का क्या नाम था ?

5. 'रामचरित मानस' किस भाषा में लिखा गया है ?
6. घनानन्द को प्रेम में विश्वासघात किससे मिला ?
7. विद्यापति की पदावली की रचना किस भाषा में हुई है ?
8. कवि रहीम का पूरा नाम बताइए।
9. 'प्रेम वाटिका' के रचनाकार का नाम लिखिए।
10. किस घटना ने तुलसीदास के जीवन को एकदम बदलकर विरक्त भाव से मुक्त कर दिया ?

खण्ड 'ब'

निम्नांकित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग **150-200** शब्द सीमा में दीजिए। **[5 × 5 = 25]**

1. 'कबीर के राम' विषय पर टिप्पणी लिखिए।

अथवा

विद्यापति के कला-पक्ष की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. जायसी के जीवन-वृत्त एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रहीम का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. सूर की भक्ति-भावना पर सारगर्भित लेख लिखिए।

अथवा

"रसखान का बाल वर्णन सूर के बाल वर्णन की समता करने में सक्षम है।" विवेचना कीजिए।

4. तुलसी की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

अथवा

तुलसी के जीवन वृत्त और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

5. घनानन्द के सौन्दर्य चित्रण पर एक निबन्ध लिखिए।

अथवा

राम काव्य धारा की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

खण्ड 'स'

निम्नांकित दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग **300-350** शब्द सीमा में दीजिए। **[8 × 5 = 40]**

निम्नांकित पद्यांशों की प्रसंग एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

1. हिरदा भीतर दौ बलै, धुवाँ प्रगट न होइ।

जाकै लागी सो लखैं, कै जिहि लाई सोइ॥

राम रसाइण प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।

कबीर पीवण दुर्लभ है, माँगै सीस कलाल॥

अथवा

पाट महादेइ! हिये न हारु। समुझि जीउ, चित चेतु सँभारू॥

भौंर कँवल संग होइ गेरावा। सँवरि नेह मालती पहँ आवा॥

पपिहै स्वाती सौं जस प्रीती। टेकु पिपास, बांधु मन थीती॥

धरतिंहि जैस गगन सौं नेहा। पलटि आव वरषा ऋतु मेहा॥

पुनि बसंत ऋत आव नवेली। सो रस, सो मधुकर, सो बेली॥

जिनी अस जीव करसि तू बारी। यह तरिवर पुनि उठिहिं सँवारी॥

दिन दस बिनु जल सूखि विधंसा। पुनि सोइ सरवर, सोई हंसा॥

2. जीवन मुंहचाही को नीको।

दरस परस दिन-रात करति हैं कान्ह पियारे पी को॥

नयनन मूंदि-मूंदि किन देखौ बंध्यो ज्ञान पोथी को।

आछे सुन्दर स्याम मनोहर और जगत सब फीको॥

सुनो जोग को का लै कीजै यहाँ ज्वान है जी को।

खाटी मही नहीं रुचि मानै सूर खवैया घी को॥

अथवा

झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।

हँसि बोलनि मैं छबि फूलन की बरषा उर ऊपर जाति है ह्वै।

लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।

अंग-अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अवै धर च्वै॥

3. "कबीर कवि और भक्त की अपेक्षा समाज-सुधारक के रूप में अधिक मुखरित हुए हैं।" इस कथन को सोदाहरण प्रमाणित कीजिए।

अथवा

जायसी के विरह-वर्णन की विशेषताएँ बताते हुए हिन्दी में उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

4. सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, प्राय: उतनी ही प्रचुरता वाग्विदग्धता की भी है। इस कथन के आलोक में सूर के उक्तिवैचित्र्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

गोस्वामी तुलसीदास के कलापक्ष एवं भावपक्ष को उद्घाटित कीजिए।

5. घनानन्द की प्रेमानुभूति पर विचार करते हुए सिद्ध कीजिए कि 'घनानन्द प्रेम की पीर' के कवि हैं।

अथवा

"हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है।" स्पष्ट कीजिए।

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ d ❐ ❐ ❐ ❐ ❐